जागरूकता से कोरोना को हराने का प्रयास

सूर्यकांत देवांगन
जिला कांकेर, छत्तीसगढ़

“रफ्तार से चलती ट्रेन अगर रास्ते के बीच घंटे भर भी कहीं अचानक से रूक जाए तो हम बेचैन हो जाते हैं और अपनी सीट से उठकर यहां से वहां देखने लगते है। यह तो असल जिंदगी है जहां लाॅकडाउन ने सबकुछ रोक दिया है, और इसमें हम घरों से बाहर भी नहीं निकल सकते। यानि जिंदगी बचानी है तो घरों में कैद रहना ही है।

किसी बीमारी को लेकर गांव-गांव में इस तरह की जागरूकता मुझे पहली बार देखने को मिली, छत्तीसगढ़ के कांकेर जिले स्थित भानुप्रतापपुर ब्लॉक के ग्राम कन्हारगांव में पहली बार हमने अपने साथ-साथ पूरे गांव को सुरक्षित रखने मुहल्ले और गांव के मुख्य रास्ते को ही बंद कर दिया ताकि बाहरी व्यक्ति कोई गांव में प्रवेश नहीं कर सके। यहां तक कि राशन की दुकान में भी गांव के लोग सोशल डिस्टेंस का पालन कर रहे हैं। तो दूसरी ओर लाॅकडाउन से लोगों के पास काम और पैसा नहीं है लेकिन जिस तरह की मदद जिला प्रशासन, ग्राम पंचायत और अन्य संस्थाएं कर रही हैं उससे लोगों को ज्यादा समस्या का सामना नहीं करना पड़ रहा है।

राशन की दुकान में भी गांव के लोग सोशल डिस्टेंस का पालन कर रहे हैं

जरूरत की चीजें एक निर्धारित समय में ही सही लेकिन लोगों को उपलब्ध कराई जा रही हैं। पिछले एक महीने से मैंने घर की पास से गुजरने वाली सड़क पर रफ्तार से चलती गाड़ियों की आवाज नहीं सुनी, लोग

भी एक्का-दुक्का ही घुमते दिखे हैं। ऐसा नजारा इतने दिनों के लिए पहली बार देख रहा हूं, घर में समय काटने का सहारा टीवी और मोबाइल ही है जिसके सहारे देश-दुनिया की जानकारी के साथ खुद का मनोरंजन कर रहे हैं।

लाॅकडाउन का एक दृश्य मुझे यह भी देखने को मिला कि ऐसे घर या परिवार जिनके सदस्य अन्य राज्यों से लौटे हैं(जरूरी नहीं कि वे कोरोना प्रभावित राज्य हो) जिनको सतर्कता के लिहाज से क्वारंटाइन अवधि में रखा गया है या था, उनके प्रति लोगों के व्यवहार में एकाएक परिवर्तन आया है, लोग उन्हें कहीं न कहीं हीन भावना या छूआछूत की नजर से देखने लगे हैं। मुझे लगता है जिस तरह से लोग बीमारी को लेकर जागरूक हुए हैं उसी तरह इस मानसिकता से भी उन्हें जागरूक होना पडेगा और प्रशासन को भी इस दिशा में पहल करने की आवश्यकता है।”

ईमेल- suryadev235@gmail.com